AISHE 2023-24: उच्च शिक्षा में 4.5 करोड़ नामांकन, GER 30

शिक्षा और मानव संसाधन | समाचार संदर्भ: 8 जुलाई 2026 (रिपोर्ट-डेटा: शैक्षणिक वर्ष 2022-23 व 2023-24) | प्रकाशित: 17 अक्टूबर 2026

पृष्ठभूमि और संदर्भ

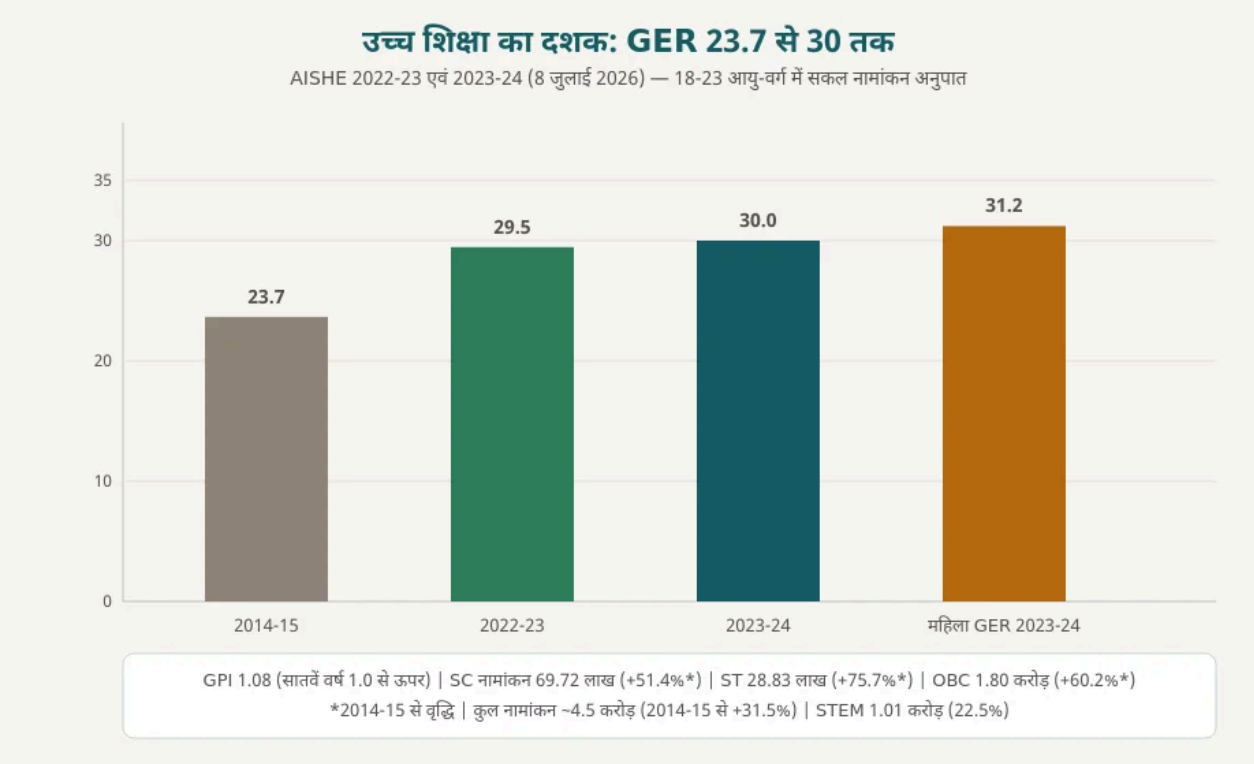
उच्च शिक्षा के आंकड़े नीति-निर्माण की नींव हैं — संसद में उत्तर, राज्यों की योजना और UGC की ग्रांट सब इन्हीं पर टिकते हैं। अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE) शिक्षा मंत्रालय का सर्वेक्षण है जिसमें देशभर के उच्च शिक्षा संस्थान (HEI) वेब-आधारित डेटा कैप्चर फॉर्मेट (DCF) के जरिए नामांकन, संकाय, बुनियादी ढाँचा और परीक्षा-परिणाम की जानकारी अपलोड करते हैं। यह भारत में उच्च शिक्षा का प्राथमिक आधिकारिक सांख्यिकी-स्रोत है। ध्यान देने योग्य बात: भागीदारी स्वैच्छिक है और आंकड़े संस्थानों द्वारा स्व-रिपोर्ट किए जाते हैं — मंत्रालय सत्यापन-जाँच करता है, पर डेटा-गुणवत्ता की मूल जिम्मेदारी संस्थानों की रहती है (रिपोर्ट की 'सर्वेक्षण-टिप्पणी')। इस बार दो वर्षों — 2022-23 और 2023-24 — की रिपोर्ट एक साथ आई है।

खबरों में क्यों

शिक्षा मंत्रालय ने 8 जुलाई 2026 को AISHE 2022-23 और 2023-24 रिपोर्ट जारी की। दोनों वर्षों में भागीदारी 90% से अधिक रही — 2023-24 में 64,756 पंजीकृत HEI में से 59,533 ने डेटा दिया। मुख्य निष्कर्ष: कुल नामांकन 2023-24 में लगभग 4.5 करोड़ — 2022-23 से 3.7 लाख (0.8%) और 2014-15 से 31.5% अधिक; सकल नामांकन अनुपात (GER) 29.5 से बढ़कर 30 हुआ; महिला GER 31.2 पर पहुँचा और लैंगिक समानता सूचकांक (GPI) 1.08 रहा — लगातार सातवें वर्ष 1.0 से ऊपर। सामाजिक समावेश में अनुसूचित जाति के छात्रों का नामांकन 69.72 लाख (2014-15 से 51.4% वृद्धि), अनुसूचित जनजाति का 28.83 लाख (75.7% वृद्धि) और OBC का 1.80 करोड़ (60.2% वृद्धि) हुआ। STEM नामांकन 1.01 करोड़ (कुल का 22.5%) है, महिला संकाय 7.78 लाख तक पहुँचा, और 173 देशों से 58,134 विदेशी छात्र भारतीय उच्च शिक्षा में नामांकित हैं।

प्रमुख अवधारणा: GER और GPI — नामांकन को मापने के दो पैमाने

GER (सकल नामांकन अनुपात) = 18-23 आयु-वर्ग की कुल जनसंख्या (2011 जनगणना-अनुमान के आधार पर) की तुलना में उच्च शिक्षा में नामांकित छात्रों का अनुपात। यह 'सकल' इसलिए कहलाता है कि नामांकन में उस आयु-वर्ग से बाहर के छात्र भी गिने जाते हैं — इसलिए GER सैद्धांतिक रूप से 100 से ऊपर भी जा सकता है। GPI (लैंगिक समानता सूचकांक) = महिला GER ÷ पुरुष GER। GPI = 1 का अर्थ समान भागीदारी; 1 से ऊपर का अर्थ महिला भागीदारी अधिक। भारत का GPI 2023-24 में 1.08 है — यानी कुल-स्तर पर महिला GER पुरुष से ऊँचा है; पर याद रहे, GPI एक कुल-स्तरीय औसत है — हर स्तर, हर विषय और हर राज्य में समानता का प्रमाण नहीं (विश्लेषणात्मक)।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

मुख्य तथ्य और आंकड़े

रिपोर्ट और तिथि	**AISHE 2022-23 एवं 2023-24 — 8 जुलाई 2026, शिक्षा मंत्रालय; PIB विज्ञप्ति + dohe-education.gov.in रिपोर्ट**
भागीदारी	2022-23: 56,180/60,380 HEI; 2023-24: 59,533/64,756 HEI — दोनों में 90% से अधिक
कुल नामांकन	लगभग 4.5 करोड़ (2023-24); 2022-23 से +3.7 लाख (+0.8%); 2014-15 से +31.5%
GER	23.7 (2014-15) → 29.5 (2022-23) → 30.0 (2023-24); महिला GER 31.2; SC 27.8, ST 22.8
GPI	1.08 (2023-24) — लगातार सातवें वर्ष 1.0 से ऊपर
सामाजिक समावेश	SC 69.72 लाख (+51.4% से 2014-15), ST 28.83 लाख (+75.7%), OBC 1.80 करोड़ (+60.2%)
STEM और संकाय	STEM 1.01 करोड़ (22.5%); महिला STEM-हिस्सा 38.4% से 44%; कुल संकाय 17.32 लाख (महिला 7.78 लाख)
अन्य संकेत	विश्वविद्यालय-नामांकन 1.09 करोड़ (सरकारी 68.1%); विदेशी छात्र 58,134 / 173 देश (नेपाल 24.1% शीर्ष)

आंकड़े कैसे बनते हैं — और भरोसा कहाँ तक

वेब-आधारित स्व-रिपोर्टिंग: संस्थान AISHE पोर्टल पर DCF भरते हैं; मंत्रालय की अंतर्निहित validations और जाँच-प्रक्रिया डेटा-स्वच्छता करती है। 90% से अधिक भागीदारी इसे व्यापक बनाती है, पर 'सर्वेक्षण-टिप्पणी' स्वयं कहती है कि स्व-रिपोर्टेड बड़े सर्वेक्षण की सीमाएँ परिणाम को कुछ हद तक प्रभावित कर सकती हैं (रिपोर्ट-उद्धृत)।

दो वर्षों का संचित प्रकाशन: 2022-23 और 2023-24 की रिपोर्ट साथ आने से तुलना-शृंखला मजबूत हुई — प्रवृत्ति पढ़ना आसान हुआ; साथ ही प्रकाशन-विलंब भी सतर्क कराता है, क्योंकि नीति के लिए समयपर डेटा आवश्यक है (विश्लेषणात्मक)।

NEP लक्ष्य-संदर्भ: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने 2035 तक उच्च शिक्षा में GER 50% का लक्ष्य रखा था — GER 30 पर पहुँचना उस मार्ग का मध्य-बिंदु है; आगे का सफर गुणवत्ता और पहुँच दोनों माँगेगा (NEP-संदर्भित, विश्लेषणात्मक)।

रिपोर्ट का महत्त्व

समावेशी विस्तार का प्रमाण: SC/ST/OBC नामांकन-वृद्धि (क्रमशः 51.4% / 75.7% / 60.2% से 2014-15) कुल वृद्धि (31.5%) से तेज है — आरक्षण, छात्रवृत्ति और पहुँच-कार्यक्रमों का संचित परिणाम (आंकड़े रिपोर्ट-उद्धृत; कारक-व्याख्या विश्लेषणात्मक)।

लैंगिक-परिवर्तन: GPI सात वर्ष से 1.0 से ऊपर है और महिला STEM-हिस्सा 44% पर पहुँचा है — उच्च शिक्षा की लैंगिक-संरचना गुणात्मक बदल रही है; इसका श्रम-बाजार परिणाम आगामी वर्षों में दिखेगा (विश्लेषणात्मक)।

नीति-आधार: AISHE राज्यों की योजना, UGC आवंटन और NEP-क्रियान्वयन समीक्षा का आधार-डेटा है — इसकी गुणवत्ता सीधे नीति-गुणवत्ता से जुड़ी है (विश्लेषणात्मक)।

चुनौतियाँ और प्रश्न-चिह्न

स्व-रिपोर्टिंग की सीमा: भागीदारी स्वैच्छिक और डेटा स्व-घोषित — रिपोर्ट स्वयं इस सीमा को स्वीकारती है; स्वतंत्र सत्यापन-परत की माँग इसलिए बनी रहती है (रिपोर्ट-टिप्पणी आधारित)।

विस्तार बनाम गुणवत्ता: GER 30 भी NEP-लक्ष्य 50 से काफी नीचे है; नामांकन-वृद्धि के साथ संकाय-अनुपात, अनुसंधान-उत्पादन और रोजगार-योग्यता जैसे गुणवत्ता-संकेतक समान गति नहीं पकड़ रहे (विश्लेषणात्मक)।

संस्थागत असमानता: निजी विश्वविद्यालयों में कुल विश्वविद्यालय-नामांकन का 31.9% है और राज्य-वार GER में बड़ा अंतर है (रिपोर्ट की राज्य-तालिकाएँ) — कुल-औसत क्षेत्रीय विषमताएँ छिपा देता है (विश्लेषणात्मक)।

आगे की राह

अगले चरण की तीन प्राथमिकताएँ: (i) GER 30 से 50 की दिशा में क्षमता-विस्तार — विशेषकर उन राज्यों में जहाँ GER राष्ट्रीय औसत से नीचे है; (ii) डेटा-विश्वसनीयता — AISHE पर स्वतंत्र ऑडिट-परत और त्वरित प्रकाशन-चक्र; (iii) नामांकन से परिणाम की ओर — रोजगारता, अनुसंधान और सीखने के परिणाम-संकेतकों को सर्वेक्षण-क्रम में जोड़ना। महिला और SC/ST/OBC नामांकन-वृद्धि को स्नातकोत्तर और संकाय-स्तर तक पहुँचाना समावेश की अगली कसौटी है।

अवधारणा में अंतर

तीन अंतर स्पष्ट रखें: (1) नामांकन (enrolment) बनाम GER — पहला छात्रों की कुल संख्या है, दूसरा आयु-वर्ग-जनसंख्या के अनुपात में भागीदारी; (2) GER बनाम GPI — पहला स्तर बताता है, दूसरा लैंगिक-अनुपात; GPI>1 का अर्थ महिला GER अधिक, समान अवसर नहीं; (3) AISHE बनाम UDISE+ — AISHE उच्च शिक्षा (कॉलेज-विश्वविद्यालय) का, UDISE+ विद्यालयी शिक्षा का सर्वेक्षण है; दोनों मिलकर शिक्षा-सांख्यिकी पूरी करते हैं।

मेंस दृष्टि

GS-II: शिक्षा-नीति, सामाजिक समावेश, महिला-सशक्तिकरण; NEP 2020। उत्तर में रिपोर्ट-आंकड़े (GER 30; GPI 1.08; SC/ST/OBC वृद्धि — attributed) और स्व-रिपोर्टिंग की सीमा का संतुलन रखें।

UPSC CSE Mains शैली: मौलिक अभ्यास प्रश्न

'भारतीय उच्च शिक्षा में अब विस्तार का प्रश्न धीरे-धीरे हल हो रहा है; अगली चुनौती गुणवत्ता और समावेश की गहराई की है।' AISHE 2023-24 के निष्कर्षों के आलोक में टिप्पणी कीजिए।

(उत्तर 150 शब्दों में दीजिए) | 10 अंक

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: AISHE और 8 जुलाई 2026 रिलीज़।

मुख्य भाग में: अवधारणा: GER/GPI; तर्क: नामांकन-विस्तार, सामाजिक-लैंगिक समावेश, NEP-लक्ष्य की दूरी; सीमाएँ: स्व-रिपोर्टिंग, गुणवत्ता-संकेतक, क्षेत्रीय असमानता; मार्ग: क्षमता, ऑडिट, परिणाम-संकेतक।

निष्कर्ष में: नामांकन की बढ़ोतरी को सीखने, रोजगार या हर क्षेत्र में समान अवसर का प्रमाण न मानें; क्षमता-विस्तार के साथ डेटा-जाँच, समय पर प्रकाशन और परिणाम-संकेतक सुझाएँ। राष्ट्रीय GER/GPI औसत तथा स्व-रिपोर्टिंग की सीमा स्पष्ट रखें।

स्रोत

- प्रेस सूचना ब्यूरो — AISHE 2022-23 एवं 2023-24 रिलीज़ (8 जुलाई 2026)
- उच्चतर शिक्षा विभाग — AISHE 2023-24 रिपोर्ट (पूर्ण पाठ)

सभी आंकड़े PIB विज्ञप्ति (PRID 2282525) और AISHE 2023-24 रिपोर्ट (dohe-education.gov.in) से शब्दशः सत्यापित; रिपोर्ट-डेटा शैक्षणिक वर्ष 2022-23/2023-24 का है, प्रकाशन 8 जुलाई 2026। STEM आंकड़ा रिपोर्ट-पाठ (1.01 करोड़) के अनुसार है; PIB विज्ञप्ति में 1.02 करोड़ अंकित है।

यह भी पढ़ें: मातृभाषा में शिक्षा का संवैधानिक दावा: पदम मेहता निर्णय और राजस्थानी का माध्यम-प्रश्न | विद्यालयी वेशभूषा: अनुशासन, विविधता और शिक्षा तक पहुँच।

याद रखें: तीन संख्याएँ याद रखें: GER 30, GPI 1.08, और SC/ST नामांकन में दशकीय 51-76% की वृद्धि। विस्तार की कहानी सिद्ध है; अगला अध्याय गुणवत्ता, डेटा-विश्वसनीयता और क्षेत्रीय समानता का है।